उपसंहार

उपसंहार

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी की ग़ज़लों का अध्ययन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उन्हें उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6.1 शोधकार्य का सारांश :-

'नीरज की ग़ज़लों का अध्ययन' इस शोधकार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। उनका सारांश इस प्रकार से दिया जायेगा -

प्रथम अध्याय है - नीरज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व। इस अध्याय में नीरज जी की जन्मतिथि, जन्मस्थान, जाति, व्यवसाय, मूल नाम, उपनाम, जन्म कुंडली आदि का वर्णन किया है। उनकी जन्मतिथि के बारे में होनेवाले मतभेदों का चित्रण किया गया है। परिवार का वर्णन करते हुए घर के सभी सदस्यों का वर्णन किया है साथ ही परिवार के हालात भी चित्रित किये हैं। उनके बचपन का वर्णन करते हुए पिता की मृत्यु के पश्चात फूफा के घर जाकर रहना, शिक्षा प्राप्त करना, कवि के लिए काफी मुश्किल साबित हुआ। साथ ही, अपनों का प्यार न मिलकर कुछ कड़वाहट भरा व्यवहार भी सहना पड़ा। लेकिन उनपर अच्छे संस्कार किये गए, जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल बन सका। शिक्षा के अंतर्गत उन्होंने एम.ए. तक की पढ़ाई किन हालात से गुजरकर पूरी की यह बताया है। फूफा के घर रहकर 'हाईस्कूल' की परीक्षा उत्तीर्ण की, 'वाल्कर्ट ब्रदर्स' में काम करते हुए 'इंटर मीडिएट' की परीक्षा उत्तीर्ण की, पार्ट टाईम नौकरी करके बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और डी.ए.वी. कॉलेज में नौकरी करके एम.ए. उत्तीर्ण किया। इस प्रकार उन्होंने शिक्षा का सफर तय किया। यौवन और विवाह के अंतर्गत उनके यौवन काल का वर्णन और शादी का ब्यौरा दिया गया है। यौवन में नीलिमा के साथ मित्रता, पत्रव्यवहार, मिलना और नीलिमा द्वारा प्रेम व्यक्त करना दिखाया है। जिसे उन्होंने ठुकराया और उसके बाद आज तक उनकी मुलाकात नीलिमा से नहीं हो पायी। विवाह में श्रीमती सावित्री देवी से शादी और घरेलु जीवन का वर्णन किया गया है। नौकरियाँ के अंतर्गत उन्होंने आज तक कौन - कौनसी नौकरियाँ की, उन्हें छोडने के कारण, उस समय के हालात और अंतिम नौकरी कौनसी की इसका चित्रण किया गया है।

व्यक्तित्व के अंतर्गत उनके रूप का और पहनावे का वर्णन किया गया है। उनकी खूबियों को उजागर करने का कार्य किया गया है। व्यक्तित्व में उनके प्रमुख गुणों को प्रकाश में लाया गया है। निर्भयता में अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना, दूसरों के दर्द को व्यक्त करना, गलत बातों का विरोध करना आदि बातें बतायी हैं। इसके उदाहरण के रूप में ग़ज़ल के कुछ शेर भी प्रस्तुत किये हैं। साहस में सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विषयों पर मर्मभरी बातें कहना, सत्य बातों पर विचार प्रकट करना और वर्तमान स्थिति में पनपती बुराईपर टिपण्णी करना आदि बातों का वर्णन किया है और उदाहरण के रूप में ग़ज़ल के कुछ शेर भी प्रस्तुत किये हैं। आत्मविश्वास में बताया है कि, जीवनभर कठिनाईयों का सामना करके भी किस प्रकार उन्होंने सफलता प्राप्त की। और संघर्षमय जीवन में किस

प्रकार आत्मविश्वास को बनाये रखा। अगर हमें जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो आत्मविश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है। भावुक में बताया है कि, उनका स्वभाव भावनिक था। किसी भी व्यक्ति का दर्द वे महसूस कर सकते थे। इसी कारण उनकी ग़ज़लों में आम जनता में अधिक लोकप्रिय रही हैं। विश्वशांति की चाह और एकता का संदेश में उन्होंने युद्ध, दंगे - फसाद आदि का विरोध करते हुए शांति की कामना कर के, सुखी जीवन का सपना देखा है। हिंदु - मुस्लिम झगड़ों को समाप्त करके भाईचारा बढ़ाने की बात कही है। जीवन में हार न मानना में उनका प्रयत्नशिल और आशावादी दृष्टिकोन दिखाया है, साथ ही सकारात्मक ग़ज़लों का उदाहरण दिया है।

कृतित्व के अंतर्गत उनकी ग़ज़लों के प्रमुख विषयों की चर्चा की है। सामाजिक चेतना के रूप में ग़ज़लों का निर्माण करके लोगों को उन्होंने प्रेरणा दी है। बेकारी में जिनेवाले समाज की स्थिति का चित्रण किया है। मानवतावादी विचारधारा को लोगों के सम्मुख रखने का प्रयास किया है और इन्सानियत का फर्ज निभाया है। आज के समाज में धोखाधड़ी का राज है, इसके कारण बिगडे हालात और समाज के - हास का चित्रण किया है। मृत्युदर्शन के अंतर्गत जीवन की नश्वरता, अस्तित्वहीन घटनाओं का चित्रण किया गया है। हर व्यक्ति का अपने बारे में सोचना, स्वार्थ दिखलानेवाली व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। और राष्ट्रीय भावना में राष्ट्र के प्रति प्रेम, अपनापन, कर्तव्य आदि बातें व्यक्त की है। इसप्रकार नीरज जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रभावशाली रहा है।

द्वितिय अध्याय है - नीरज के प्रमुख काव्यसंग्रहों का परिचय। इस अध्याय में नीरज जी के बीस काव्य-संग्रहों की जानकारी दी गई हैं। प्रथम कृति है 'संघर्ष' जिसका प्रकाशन 1944 में हुआ। इसका दूसरा संस्करण 'नदी किनारे' नाम से 1958 में निकाला गया। इस काव्य - कृति की कविताओं में कवि के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया गया है। और इसमें साठ रचनाएँ संकलित हैं। 'अंतर्ध्वनि' का प्रकाशन 1946 में हुआ। इसमें दूसरा संस्करण 'लहर पुकारे' नाम से 1959 में प्रकाशित हुआ। इसमें छियालीस कविताओं का संकलन है। यह कवि के किशोर काल की कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं में संघर्षमय जीवन की तीव्रता कम दिखाई देती है, अतः इसका नामकरण शांति के द्योत्क के रूप में 'लहर पुकारे' किया गया। 'विभावरी' का प्रकाशन 1951 में हुआ और इसका दूसरा संस्करण 'बादर बरस गये' नाम से 1958 में प्रकाशित हुआ। इस काव्य - कृति में बावन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। जिनमें विषय वैविध्यता दिखाई देती है। इस रचना के समय कवि ने अपनी अलग सी जीवन शैली बना ली है। कई आलोचकों का यह मानना है कि, प्रस्तुत रचना निराशावादी है। 'गीत भी अगीत भी' का प्रकाशन 1963 में हुआ, फिर दीप जलेगा' प्रकाशन 1970 में और 'तुम्हारे लिए' का प्रकाशन 1971 में हुआ। यह तीनों रचनाएँ कविताओं एवं गीतों का संकलन हैं। इनमें इकतालिस कविताओं का संकलन किया गया है। इनमें प्रेम गीत भी हैं, जिनमें संयोग और वियोग दोनों अवस्थाओं का वर्णन हुआ है। 'नीरज के लोकप्रियता गीत' का दो बार प्रकाशन हुआ और दोनों में इतनी विभिन्नता है कि, अलग - अलग रचनाएँ ही कहना पड़ेगा। पहली कृति एक सौ ग्यारह पन्नों की होकर उसमें चौतिस कविताओं का संकलन है। दूसरी कृति में फिल्मी गीतों का संकलन है,

जिनकी संख्या इक्यानवे है। कवि के इस गीत संकलन में सौन्दर्य, प्रेम और मानवतावादी विचारधारा के तत्व देखने के लिए मिलते हैं। 'कारवाँ गुजर गया' का प्रकाशन 1991 में हुआ और इसका दूसरा संस्करण इसी नाम से 1996 में निकाला गया। इसमें कविताओं एवं ग़ज़लों का संकलन हैं, जिनमें अठारह ग़ज़लें और चालिस कविताएँ हैं। ग़ज़ल का विषय प्रेम न होकर सामाजिक तथा राजनीतिक विषयोंपर ग़ज़लों का निर्माण किया गया है। जो आम आदमी को अधिक भा जाती हैं। 'प्राणगीत' का प्रकाशन 1954 में हुआ। इसके अन्य संस्करण इसी नाम से निकाले गये। इसमें नौ पृष्ठों का दृष्टिकोण है। यह रचना एक सौ बारह पृष्ठों की है। और इसमें पचास कविताओं का संकलन किया गया है। इसमें छह कविताएँ ऐसी हैं, जो अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद हैं। इस रचना में सौंदर्य, प्रेम, मृत्यु और भूख (रोटी) का वर्णन है।

'दर्द दिया है' का प्रकाशन 1956 में हुआ। इसके प्रारंभ में दस पृष्ठों का दृष्टिकोण दिया गया है। यह काव्य कृति एक सौ छब्बीस पृष्ठों की है और इसमें चौवन कविताओं को संकलित किया गया है। जिनमें अंग्रेजी में लिखी तीन कविताएँ शामिल हैं और 'स्वर्ग दूत से' यह उर्दू कविता से प्रेरणा लेकर लिखी गई कविता है। कवि के यह गीत दूनिया के घावों पर मरहम लगाने का कार्य करते हैं। 'दो गीत' का प्रकाशन जुलाई 1958 में हुआ। इसके आरंभ में निवेदन दिया गया है। इसमें 'मृत्युगीत' और 'जीवन गीत' नाम की दो कविताएँ हैं। 'मृत्युगीत' में चार - चार पंक्तियों के एक सौ पचपन छंद हैं, तो 'जीवनगीत' में एक सौ चौवन। 'आसावरी' का प्रकाशन 1958 में हुआ। कवि ने इस रचना को निवेदन नहीं दिया परंतु प्रत्येक कविता के आरंभ में उससे संबंधित चित्र दिखाई देता है। प्रस्तुत रचना में अट्ठाईस कविताओं को संकलित किया है। इसे सचित्र कृति के रूप में जाना जाता है। इस रचना के भी संस्करण निकाले गये, मगर नाम में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं लाया गया। इसमें शामिल तीन कविताओं का रचना काल 1946, 1947 तथा 1949 है। बाकि कविताओं का रचनाकल पता नहीं चलता। इस में नैराश्य भावना की प्रधानता है। 'नीरज की पाती' का प्रकाशन दिसम्बर 1958 में हुआ। इसमें 'दो शब्द' शीर्षक से चौबीस पंक्तियों का निवेदन प्रस्तुत किया है। एक सौ दस पृष्ठों की इस काव्य कृति में इक्कीस कविताओं का संकलन किया गया है। इसमें विषय की विविधता दिखाई देती है। कवि ने पातियों में समान का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही गलत प्रथाओं का कड़ा विरोध किया है। इस काव्य कृति में देश - प्रेम, एकता, सामाजिक चेतना, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि आदि विषयों को लेकर ग़ज़लों का निर्माण किया गया है। साथ ही कहीं-कहीं प्रेमाभिव्यक्ति का चित्रण भी होता है। 'मुक्तकी' का प्रकाशन 1960 में हुआ। इसमें चार - चार पंक्तियों के एक सौ एक मुक्तक हैं। कई आलोचक इन मुक़्तकों को रूबाइयाँ ही मानते हैं। इनमें विषय की विविधता दिखाई देती है। चार पंक्तियों में सार भरी और चमत्कार करनेवाली बात कहना, 'मुक्तकी' कहलाती है। यह रचना हिंदी साहित्य जगत् में उल्लेखनीय मानी जाती है। 'लिख लिख भेजत पाती' का प्रकाशन 1956 में हुआ। यह कवि नीरज जी के साथ एक महिला की बातचित है। जो अंग्रेजी में होती थी। कवि ने इसे हिंदी में अनुदित करके प्रकाशित किया है। इससे कवि के व्यक्तित्व और काव्य की गरिमा का परिचय होता है। 'हिन्दी रूबाइयाँ' का प्रकाशन 1963 में हुआ। इसमें हिंदी के एक सौ नौ लोकप्रिय कवियों की सर्वश्रेष्ठ रूबाइयाँ

और मुक्तक सम्मिलित हैं। इसमें नीरज जी की पाँच रूबाइयाँ शामिल हैं। यह भावना व्यक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

तृतीय अध्याय है - ग़ज़लः सैद्धांतिक अध्ययन। इस अध्याय में आरंभ में ग़ज़ल का अर्थ बताया है और सामान्य जानकारी को हमारे सम्मुख रखा है। फिर ग़ज़ल की परिभाषाएँ दी गई हैं। इसमें ग़ज़ल की कोशगत परिभाषाएँ और विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में ग़ज़ल यह दो विभाग दिखाई देते हैं। ग़ज़ल की कोशगत परिभाषाएँ में विभिन्न शब्द कोशों में बताई परिभाषाओं को उजागर किया है और अंत में अपना मत दिया है। तो विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में ग़ज़ल के अंतर्गत विद्वानों के मत प्रकट किए हैं। इन परिभाषाओं को देखने के पश्चात ग़ज़ल को समझने में आसानी महसूस होती है। ग़ज़ल के अंग के अंतर्गत शेर, मिसरा, काफ़िया, रदीफ, मतला, मक्ता आदि की जानकारी दी गई है और उदाहरण के तौर पर ग़ज़ल का कुछ अंश प्रस्तुत किया है। दो मिसरों का अर्थ पूर्ण होकर शेर बनता है। शेर की प्रत्येक पंक्ति को मिसरा कहते हैं। ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पहले आनेवाले उन शब्दों को काफिया कहते हैं, जिनके अंतिम एक या एकाधिक अक्षर स्थायी होते हैं और उनसे पूर्व का अक्षर चपल होता है। रदीफ काफिये के बाद आती है और प्रत्येक शेर में अपनी जगह पर स्थिर रहती है। ग़ज़ल के पहले शेर को मतला कहते हैं, जिसके दोनों मिसरों में रदीफ और काफिया होती है। ग़ज़ल का अंतिम शेर मक्ता कहलाता है, जिसमें कवि के नाम अथवा उपनाम का प्रयोग किया जाता है। इसप्रकार शेर, मिसरा, काफिया, रदीफ, मतला, मक्ता यह ग़ज़ल के अंग ग़ज़ल का अस्तित्व दिखाने में महत्वपूर्ण साबित होते हैं। ग़ज़ल की भाषा के अंतर्गत भाषा का महत्व बताया गया है। कम शब्दों में अधिक जानकारी देना ग़ज़ल की विशेषता है। साथ ही ग़ज़ल की भाषा के अंतर्गत भाषा का महत्व बताया गया है। कम शब्दों में अधिक जानकारी देना ग़ज़ल की विशेषता है। साथ ही ग़ज़ल की भाषा सरल होनी चाहिए। उसमें मुहावरों का प्रयोग भी किया जाता है। उदाहरण देखने के पश्चात यह बात आसानी से समझ में आ जाती है। उसमें अलंकारों का सहज रूप से प्रयोग अपेक्षित है। व्यंग्यात्मकता के कारण ग़ज़ल का प्रभाव और भी बढ़ जाता है। ग़ज़ल के शिल्प - विधान के अंतर्गत ग़ज़ल के अंग, भाषा, रस - योजना, अलंकार - विधान, बिम्ब एवं प्रतीकात्मकता, छंद - सृष्टि, गेयता आदि की जानकारी दी जाती है। छंद - विधान के अंतर्गत बताया गया है कि, ग़ज़लों में विभिन्न बहरों का अर्थात छंदों का प्रयोग किया जाता है। इनमें वर्ण, मात्रा, लय, गति और यति का महत्वपूर्ण माना जाता है। छंदों का प्रभाव देखने के लिए छंद - विधान यह एक प्रभावी केंद्र माना जाएगा। अब छंद - विधान तक आते - आते ग़ज़ल की लगभग आधी जानकारी प्राप्त हो जाती है। आगे की जानकारी के लिए अन्य बातों पर ध्यान देना आवश्यक होगा।

अलंकारों का प्रयोग ग़ज़ल को किसप्रकार से प्रभावी बनाता है, यह अलंकार योजना के अंतर्गत बताया गया है। हम इस बात से परिचित हैं कि, जिसप्रकार नारी का सौंदर्य बढ़ाने का कार्य केश करते हैं, उसी प्रकार ग़ज़ल का सौंदर्य बढ़ाने का कार्य अलंकार करते है। बात चाहे सरल हो, उपरोधात्मक हो या फिर सौंदर्यात्मक अलंकार तो प्रयुक्त होते ही हैं। उर्दू ग़ज़लों में अधिकतर उपमा अलंकार का प्रयोग किया जाता है क्योंकि उनमें नारी सौंदर्य का वर्णन करना ही प्रमुख उद्देश रहता है। रस - परिपाक के अंतर्गत ग़ज़ल में रस का महत्व बताया गया है। रस यह

काव्य की आत्मा है। रसहीन कविता हो या ग़ज़ल वह श्रोता एवं पाठक को प्रभावित करने में सफल नहीं हो सकती। सौंदर्य बढ़ाने के लिए श्रृंगार रस, करूण वातावरण का चित्रण करने के लिए करूण रस, भयंकर रूप के लिए रौद्र रस और सामान्य वातावरण के लिए शांत रस का प्रयोग किया गया है। बिम्ब - विधान के अंतर्गत बताया गया है कि, बिम्ब के कारण मानसिक प्रत्यक्षीकरण एवं प्रभावात्मकता का निर्माण होता है। इससे ग़ज़ल उत्कृष्ट एवं सजीव बन जाती है। इसके लिए अंग्रेजी का 'इमेज' शब्द प्रयुक्त किया जाता है। प्रतीक - विधान के अंतर्गत बताया है कि, ग़ज़लों में प्रयुक्त होनेवाले प्रतीक जन - जीवन से संबंधित होते हैं। इसका लाभ यह है कि, आम आदमी उसे आसानी के साथ समक्ष सकता है और प्रभाव निर्माण करने में यह सफल साबित होता है। जन - जीवन से संबंधित प्रतीक प्रयुक्त करने से भाषा सहज बनती है और सरल होनेवाली ग़ज़ल भी दिलों - दिमागपर छा जाती है। ग़ज़लों के उदाहरण देखकर हम इस बात को समझ सकते हैं। ग़ज़ल में गेयता यह तत्व भी रहता है। इसके आधार पर ग़ज़ल के तीन प्रकार दिखाई देते हैं - खुली ग़ज़ल, बंदिश की ग़ज़ल और कव्वाली शैली। ग़ज़ल के प्रमुख पाँच प्रकार देखने में आते हैं। मतले से शुरू होकर मक्ते पर समाप्त होनेवाली ग़ज़ल को मुकम्मिल ग़ज़ल कहते हैं। जिस ग़ज़ल के अंतिम शेर में शायर अपने तखल्लुस का प्रयोग नहीं करता, वह बेमक्ता ग़ज़ल है। जिस ग़ज़ल का पहला शेर मतला न होकर एक आम शेर होता है, वह बेमतला ग़ज़ल है। अगर कोई बात एक से अधिक शेरों में बताई गई हो, तो उसे हम कतआयुक्त ग़ज़ल कह सकते हैं। आरंभ से लेकर अंत तक एक ही विषयवस्तु का प्रतिपादन करनेवाली ग़ज़ल को मुसलसल ग़ज़ल कहते हैं। इन प्रकारों को देखने से ग़ज़ल का गहराई से ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसप्रकार प्रस्तुत अध्याय में ग़ज़ल के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है। इसको देखकर हम ग़ज़ल को आसानी के साथ पहचान सकते हैं।

चतुर्थ अध्याय है - नीरज की ग़ज़लों की विषयवस्तु। इस अध्याय में उन विषयों पर चर्चा की गई हैं, जिनका प्रयोग प्रमुख रूप से नीरज जी की ग़ज़लों में होता है। उनमें प्रमुख हैं - सामाजिक चेतना, बेकारी, मानवतावादी विचारधारा, धोखाधडी, मृत्युदर्शन, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि, राष्ट्रीय भावना और प्रेमाभिव्यक्ति। 'सामाजिक चेतना' के अंतर्गत समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाना आता है। समाज में स्थित बुराइयोंसे समाज को सावधान करना और बुराइयोंको नष्ट करके सही राह का निर्माण करना इसमें आता है। आजकल समाज में भ्रष्टाचार, मारपीट, धोखाधड़ी जैसी समस्याएँ पनप रही हैं। उनको दृष्टिगोचर करना ही कवि को सामाजिक चेतना का आभास दिलाता है। अब तक विश्व में जितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं, उनका प्रमुख कारण सामाजिक चेतना ही रहा है। इसी को आधार बनाकर कवि ने जागृति करनेवाली ग़ज़लों का निर्माण किया है। 'बेकारी' के अंतर्गत समाज की वर्तमान समस्या का चित्रण किया गया है। जनसंख्या अधिक होने के कारण निर्माण होनेवाली बेरोजगारी और उसके दुष्परिणाम दिखाये गये हैं। लोगों द्वारा गलत रास्ता चुनना उनकी मजबूरी का प्रतिक रहता है। जब खाने को अनाज न मिले, तो अच्छा - बुरा कुछ भी समझ में नहीं आता। इसी स्थिति को व्यक्त करनेवाली ग़ज़लों का निर्माण कवि नीरज जी ने किया है। बेकारी यह आज के समाज को मिला शाप है। उसे मिटाने के लिए सभी लोगोंने एक साथ मिलकर प्रयास करने

चाहिएँ। 'मानवतावादी विचारधारा' के अंतर्गत बताया है कि, इन्सान इन्सान के साथ इन्सानियत का बर्ताव करें, इसी को मानवतावाद कहते हैं। एक - दूसरे के सुख - दुःख में साथ निभाना, जरूरत होनेपर मदद करना और सभी का भला सोचना ही मानवता है। दूसरों के फायदे के लिए खुद का नुकसान करनेवाले लोग तो ऊँगलियोंपर गिने जा सकते हैं, इन्हीं के कारण आज इन्सानियत जिंदा है। कवि ने इस भावना का विकास करने के उद्देश्य से ग़ज़लों का निर्माण है। और इसी के कारण कवि को काफी नाम मिला है। अब हम 'धोखाधड़ी' के अंतर्गत बतायी बातों को प्रस्तुत करेंगे। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को फँसाना, लूटना ही धोखाधड़ी है। आजकल धोखाधड़ी की मात्रा इतनी बढ़ चुकी है कि, अपना कौन है और पराया कौन, यह बताना भी मुश्किल हो रहा है। जब अपने खून के रिश्ते ही धोखा देने लगे हैं, तो पराये लोगों से शिकायत करना गँवारा नहीं होता। आज ऐसी स्थिति आ गई है कि, जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखता नहीं। इसी बात का चित्रण कवि ने अपनी ग़ज़लों में किया है।

'मृत्युदर्शन' के अंतर्गत कवि ने जीवन की सच्चाई बताई है। जीवन नश्वर है, मृत्यु अटल है, फिर भी मानव जिने की इच्छा रखता है। संसार की मोहमाया में फँस जाता है। मृत्यू का यथार्थ चित्रण कवि ने अपनी ग़ज़लों में किया है। मृत्यु की वास्तविकता को स्वीकार करना आवश्यक है क्योंकि वह एक निश्चित, अचल सत्य है। मृत्युदर्शन का चित्रण कवि के लफजों में देखकर उनकी प्रतिभा का महत्व जान पड़ता है। 'व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि' के अंतर्गत अपने बारे में सोचना आ जाता है। अपने हित का परिवर्तन स्वार्थ में हो जाता है। जो कुछ है, उसे संकुचित दृष्टिकोन से देखना ही व्यक्तिवाद है। जीवन आरंभ होता है अपने लिए और खत्म भी होता है तो अपने ही लिए। अगर जीवन का सफर इसतरह से चलता है तो काव्य के विषय में भी इसका महत्व रहना चाहिए। कविने सामाजिक कार्य को जब व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि से देखा, तो स्वयं का गौरव करने के बराबर महसूस किया। अतः वैयक्तिक या व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि को कवि ने अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया है। 'राष्ट्रीय भावना' के अंतर्गत जो कुछ लिखा जाएगा, वह कम ही लगेगा। अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम, भक्ति, आदर, सम्मान, मर - मिटने की भावना को हम राष्ट्रीय भावना कहेंगे। राष्ट्र में एकता का विचार, राष्ट्र की प्रगति या विकास का विचार, नयी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का सपना यह सब यशस्वी राष्ट्र की भावनाएँ हैं। राष्ट्रीयता की भावना एक साथ रहनेवाले लोगों में निर्माण होती है। एक विद्वान के अनुसार, राष्ट्रीयता एक सामूहिक भाव है, एक प्रकार की साहचर्य की भावना है या पारस्पारिक सहानुभूति है जो एक स्वदेश विशेष से संबंधित होती है। इसमें इन्सानियत और लोककल्याण की भावना प्रखर रहती है। अगर कोई बात इन्सान के हित में हो, तो उसको सम्मान देना जरूरी है। कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में राष्ट्रीय भावना का प्रभावी चित्रण किया है। 'प्रेमाभिव्यक्ति' के अंतर्गत कवि ने संयोग और वियोग पक्ष का चित्रण किया है। संयोग पक्ष की अपेक्षा वियोग का चित्रण अधिक प्रभावी रहता है। विरह का दर्द हृदय तक पहुँचना है। नरम दिल व्यक्ति की आँखों में आँसू आ जाते हैं। जीवन यापन करने के लिए रिश्ते जरूरी होते हैं और रिश्तों में प्यार होता है। अतः प्रेम यह जीवन की आवश्यक पूँजी है। संयोग पक्ष का चित्रण आनंदमयी वातावरण को प्रस्तुत करना है, जिसमें मिलन की बेला का अधिकतर वर्णन रहता है। कवि नीरज जी की ग़ज़लों में इसके भी उदाहरण देखने को मिल जाते हैं। इसप्रकार प्रस्तुत अध्याय में कवि ने ग़ज़लों के

विषयों के रूप में चित्रित प्रसंग एवं विषय को उजागर करके पाठकों के सम्मुख रखा है।

पंचम अध्याय है - नीरज की ग़ज़लों का शिल्पविधान। इस अध्याय में कवि नीरज जी की ग़ज़लों का निर्माण क्यों प्रभावी रहा यह बताया है। उनकी ग़ज़लों की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक है लेकिन ग़ज़लों में प्रयुक्त शब्द, प्रसंग, लोकोक्तियाँ और मुहावरे, वातारण देखकर आम आदमी को यह एहसास हो जाता है कि, इसमें जो बात कही है, वह तो अपनी बात है। नीरज की ग़ज़लों का शिल्पविधान स्पष्ट करनेवाली बातें हैं - नीरज की ग़ज़लों की भाषा, नीरज की ग़ज़लों में रदीफ - काफिया और नीरज की ग़ज़लों में संगीतात्मकता। नीरज की ग़ज़लों की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी है। उनकी भाषा में उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है। उनकी भाषा आम बोलचाल की भाषा होने के कारण लोगों को भाव समझने में आसानी होती है। भाषा में एक प्रकार का बाँकपन रहा है। सौंदर्य वर्णन में एक प्रकार की मिठास रहती है और दुःखी वर्णन में भयानक टीस। भाषा यह अभिव्यक्ति का माध्यम होता है, यह बात उनकी ग़ज़लें पढ़नेपर समझ में आ जाती है। उनके द्वारा प्रस्तुत ग़ज़ल सुननेपर दिल झूम उठता है। कई विद्वानों का यह मानना रहा है कि, उनकी भाषा से भी व्यक्त करने का तरिका अधिक प्रभावी है। इसी के कारणे उन्हें इतनी प्रसिद्धी प्राप्त हुई है। भाषा का अर्थ है - भावों को शामिल करना - अपने काव्य में और अपने जीवन में। कवि नीरज जी की भाषा में और भी न जाने कितने गुण हैं, जिन्हे बताना आसान नहीं। फिर भी उनकी प्रभावी भाषा के कारण उन्हें इतनी बढ़ीया ग़ज़ले लिखने का सन्मान प्राप्त हुआ है।

नीरज की ग़ज़लों में रदीफ - काफिया का प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि, उनके काव्य में ग़ज़ल का सफल प्रयोग हुआ है। रदीफ - काफिया काव्य का प्रभाव बढ़ाने का भी कार्य करता है। साथ ही किसी बातपर व्यंग करने में यह प्रभावी साबित होता है। सौंदर्य वर्णन में यह आनंद की बरसात है तो विरह वर्णन में हृदयद्रावक विलाप। नीरज जी की ग़ज़लों का शिल्पविधान इससे बरकरार रहा है और कवि की ग़ज़लों से पाठकों का मन भी प्रसन्न हुआ है। नीरज की ग़ज़लों में संगीतात्मकता के अंतर्गत बताया गया है कि, ग़ज़ल और संगीत में जो संबंध होता है, वह दिखाने का कार्य संगीतात्मकता में किया गया है। ग़ज़ल में बहर एक ऐसा तत्व है, जिससे ग़ज़ल और संगीत और भी निकट आ जाते हैं। ग़ज़ल की रचना इस प्रकार की होती है कि, आसानी से उसे सूर के साथ बाँधा जा सकता है। कवि अपनी ग़ज़लें सम्मेलन में गाकर सुनाते थे, जो इस बात का सुबूत हैं कि, उनमें संगीतात्मकता है।

इसप्रकार 'नीरज की ग़ज़लों का अध्ययन' करने के पश्चात कुछ निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। उनकी ग़ज़लें एक अनूठा अविष्कार मानी जायेंगी, जो श्रोताओं के मन और पाठकों के हृदय को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। तथा नीरज जी को आम आदमी से उठाकर श्रेष्ठ व्यक्तियों की पंक्ति में बिठा देती हैं।

6.2 शोधकार्य की प्रमुख उपलब्धियाँ -

1 ग़ज़ल भावनाप्रधान काव्य है।
2 ग़ज़ल का प्रयोग समाज जागृत करने के लिए भी किया जा सकता है।
3 नीरज की भाषा हृदयस्पर्शी है।
4 नीरज की ग़ज़लों में बेकारी का चित्रण हुआ है।
5 नीरज की ग़ज़लों में मानवतावादी विचारधारा प्रकट होती है।
6 नीरज की ग़ज़लों में धोखाधड़ी का चित्रण हुआ है।
7 नीरज की ग़ज़लों में मृत्युदर्शन दिखाई देता है।
8 व्यक्तिवादी जीवन दृष्टी नीरज की ग़ज़लों की विशेषता है।
9 राष्ट्रीय भावना का चित्रण नीरज की ग़ज़लों में ~~होना है~~। हुआ
10 नीरज की ग़ज़लों में प्रेमाभिव्यक्ति का चित्रण हुआ है।